Prisoner of Time or Destiny?

समय का बंदी या नियति का?

Part 1 — The Hidden Power

Varun Gupta · A Veena Studios Original

अध्याय 1 — अनजान चेहरे, जुड़ी नियति

सुबह के लगभग आठ बज रहे थे।

सूर्य की किरणें शहर की ऊँची-ऊँची इमारतों के बीच से निकलकर सड़कों पर पड़ रही थीं। वाहनों की आवाजाही बढ़ने लगी थी। दुकानदार अपनी दुकानें खोल रहे थे और लोग अपने-अपने कार्यों के लिए घरों से निकल रहे थे।

लाखों लोगों की भीड़ वाले इस शहर में आज भी सब कुछ सामान्य था।

लेकिन इसी शहर में कुछ ऐसे लोग एकत्र होने वाले थे, जिनके कारण आने वाले समय में संसार की व्यवस्था बदलने वाली थी।

शहर के एक विशाल अपार्टमेंट के मुख्य द्वार पर एक ऑटो आकर रुका।

“भैया, यहीं रोक दीजिए।”

ऑटो से लगभग बीस वर्ष का एक युवक उतरा। उसका नाम राघव था।

कंधे पर बैग, हाथ में एक बड़ा सूटकेस और चेहरे पर उत्साह। उसने ऑटो चालक को पैसे दिए और सामने खड़ी विशाल इमारत को देखने लगा।

उसने अपना मोबाइल निकाला और घर पर फोन किया।

“पिताजी, पहुँच गया हूँ। आप चिंता मत करना। अब आपका बेटा अपना ध्यान स्वयं रख सकता है।”

दूसरी ओर से कुछ निर्देश मिले।

राघव हँसते हुए बोला, “अरे पिताजी, पढ़ने आया हूँ, युद्ध लड़ने नहीं।”

फोन रखते ही उसने अपना सामान उठाया और अपार्टमेंट के अंदर चला गया।

उसे क्या पता था कि जिस युद्ध की बात उसने आज हँसते हुए कही थी, एक दिन उसी से कहीं अधिक भयानक युद्ध उसके जीवन का हिस्सा बनने वाला था।

कुछ समय बाद एक टैक्सी उसी अपार्टमेंट के सामने आकर रुकी।

उसमें से एक सुंदर युवती उतरी। उसका नाम नंदिनी था।

आधुनिक पहनावा, आत्मविश्वास से भरा चेहरा और जीवन में कुछ बड़ा करने की इच्छा।

वह अपनी माँ से फोन पर बात कर रही थी।

“हाँ माँ, पहुँच गई हूँ। आप हर पाँच मिनट में फोन मत करना। मैं अब छोटी बच्ची नहीं हूँ।”

माँ ने कुछ कहा तो नंदिनी मुस्कुराने लगी।

“ठीक है, खाना समय पर खाऊँगी। अब फोन रखती हूँ।”

फोन रखने के बाद उसने कुछ क्षण अपने मोबाइल की स्क्रीन को देखा। उस पर उसके परिवार का चित्र था।

उसने चित्र को छुआ और धीरे से कहा—

“आप सबकी याद आएगी।”

स्वतंत्रता की प्रसन्नता और परिवार से दूर होने की पीड़ा, दोनों एक साथ उसके मन में थीं।

वह अपना सामान लेकर अपार्टमेंट के अंदर चली गई।

उसी सड़क पर एक युवक पैदल चला आ रहा था।

साधारण वस्त्र, आँखों पर मोटे शीशे का चश्मा, करीने से संवारे हुए बाल और हाथ में एक कागज, जिस पर अपार्टमेंट का पता लिखा हुआ था।

उसका नाम विवेक था।

वह कभी कागज को देखता, तो कभी आसपास की इमारतों को।

काफी देर चलने के बाद उसे अपना गंतव्य दिखाई दिया।

उसने संतोष की साँस ली।

“अंततः पहुँच ही गया।”

उसके पास सामान के नाम पर एक बैग और एक छोटा-सा थैला था।

विवेक पढ़ाई में बहुत अच्छा था, लेकिन अनजान लोगों से बात करने में उसे कठिनाई होती थी। उसके मन में अनेक विचार होते थे, परंतु उन्हें व्यक्त करने का साहस बहुत कम था।

अपार्टमेंट के अंदर प्रवेश करने से पहले उसने स्वयं से कहा—

“बस पढ़ाई पर ध्यान देना है। किसी से कोई विवाद नहीं करना है।”

किंतु जीवन हमेशा मनुष्य की बनाई योजनाओं के अनुसार नहीं चलता।

कभी-कभी परिस्थितियाँ उसे वही करने के लिए विवश कर देती हैं, जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की होती।

दिन बढ़ने के साथ ही कई अन्य युवक-युवतियाँ भी उस अपार्टमेंट में पहुँचने लगे।

उन्हीं में देव और मीरा भी थे।

देव के स्वभाव में सरलता थी। वह अनजान लोगों से भी इस प्रकार बात करता था, जैसे उन्हें वर्षों से जानता हो।

वहीं मीरा बहुत चंचल और हँसमुख थी। उसे नए लोगों से मिलना और नए संबंध बनाना अच्छा लगता था।

सभी अलग-अलग शहरों से आए थे। सभी की पारिवारिक परिस्थितियाँ अलग थीं। सभी के सपने अलग थे।

लेकिन अब उनका गंतव्य एक था।

इनमें से कोई किसी का सबसे प्रिय मित्र बनने वाला था।

कोई किसी के जीवन का प्रेम।

कोई किसी के जीवन का सबसे बड़ा सहारा।

और कोई ऐसा भी था, जो अपने ही मित्रों के जीवन में विनाश का कारण बनने वाला था।

लेकिन अभी इनमें से कोई भी अपने आने वाले समय से परिचित नहीं था।

शायद एक व्यक्ति को छोड़कर...

कॉलेज का मुख्य द्वार

कुछ समय बीता।

शहर के एक प्रतिष्ठित कॉलेज के बाहर विद्यार्थियों की भीड़ लगी हुई थी।

नए सत्र का आरंभ हो चुका था। कहीं विद्यार्थी अपने मित्रों से मिल रहे थे, तो कहीं नए विद्यार्थी स्वयं को उस वातावरण में ढालने का प्रयास कर रहे थे।

राघव तेजी से चलता हुआ कॉलेज के अंदर चला गया।

उसके चेहरे पर वही उत्साह था, जो अपार्टमेंट पहुँचते समय दिखाई दिया था।

वहीं कॉलेज के मुख्य द्वार से कुछ दूरी पर विवेक खड़ा था।

आज उसका पहनावा बदल चुका था। नए वस्त्र, नया चश्मा और बालों की नई शैली।

बाहरी व्यक्तित्व में परिवर्तन स्पष्ट था, लेकिन उसके भीतर का भय अभी भी वैसा ही था।

वह कॉलेज के अंदर प्रवेश करना चाहता था, परंतु उसके कदम आगे नहीं बढ़ रहे थे।

कल की कुछ घटनाएँ बार-बार उसके मस्तिष्क में घूम रही थीं।

उसने हिम्मत जुटाई और एक कदम आगे बढ़ाया।

फिर रुक गया।

तभी किसी ने पीछे से उसके कंधे पर हाथ रखा।

“भाई, क्या कॉलेज का द्वार खुलने की प्रतीक्षा कर रहे हो?”

विवेक ने पीछे मुड़कर देखा।

वह देव था।

“नहीं... ऐसा कुछ नहीं है।”

“तो अंदर क्यों नहीं जा रहे?”

“बस ऐसे ही।”

देव ने मुस्कुराते हुए कहा, “आज मेरा भी यहाँ पहला दिन है। मुझे भी नहीं पता अंदर क्या होगा। चलो, दोनों साथ चलते हैं।”

विवेक कुछ नहीं बोला।

देव ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा।

“और सुनो, मनुष्य को किसी से डरना नहीं चाहिए। सामने वाला भी हमारी तरह मनुष्य ही है। अधिक से अधिक क्या करेगा? कुछ बोलेगा। बोलने दो।”

विवेक के चेहरे पर हल्की मुस्कान आ गई।

“मेरा नाम विवेक है।”

“और मेरा देव। चलो विवेक, आज से तुम्हारा एक मित्र तो बन गया।”

दोनों साथ-साथ कॉलेज के अंदर प्रवेश कर गए।

वह एक साधारण परिचय था, लेकिन आने वाले वर्षों में यही मित्रता उनके परिवारों और उनकी अगली पीढ़ी के लिए भी महत्वपूर्ण बनने वाली थी।

वह रहस्यमयी युवक

कॉलेज के मुख्य द्वार से कुछ दूरी पर एक युवक बैठा हुआ था।

साधारण वस्त्र, शांत चेहरा और आँखों में एक विचित्र गंभीरता।

वहाँ उपस्थित अन्य लोगों की अपेक्षा वह बिल्कुल अलग दिखाई दे रहा था।

न तो उसे कॉलेज के अंदर जाने की जल्दी थी, न ही वह किसी से बात कर रहा था।

उसकी दृष्टि लगातार कॉलेज के मुख्य द्वार पर थी।

जैसे वह किसी की प्रतीक्षा कर रहा हो।

जैसे उसे पहले से पता हो कि कौन आने वाला है।

विवेक और देव को एक साथ कॉलेज के अंदर जाते देखकर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।

उसने धीरे से कहा—

“तो ऐसे हुई थी तुम्हारी मित्रता।”

उसकी आँखों में प्रसन्नता थी, लेकिन उसके चेहरे पर छिपी पीड़ा को समझ पाना कठिन था।

वह दोनों को तब तक देखता रहा, जब तक वे उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गए।

कुछ क्षण के लिए उसने अपनी आँखें बंद कर लीं।

उसके मन में अनेक स्मृतियाँ उभरने लगीं।

कुछ हँसते हुए चेहरे।

कुछ पुराने संवाद।

कुछ ऐसे संबंध, जिनका मूल्य शायद वह अब समझने लगा था।

तभी पास बैठा एक वृद्ध व्यक्ति उससे बोला—

“बेटा, किसी की प्रतीक्षा कर रहे हो?”

युवक ने उसकी ओर देखा।

“हाँ।”

“कोई विशेष व्यक्ति है?”

युवक कुछ क्षण शांत रहा।

फिर मुस्कुराते हुए बोला—

“एक नहीं, कई हैं।”

“तो उनसे जाकर मिल क्यों नहीं लेते?”

इस प्रश्न पर युवक की मुस्कान धीरे-धीरे समाप्त हो गई।

उसने कॉलेज के द्वार की ओर देखते हुए कहा—

“कभी-कभी अपने सबसे निकट के लोगों से भी दूरी बनाकर रखनी पड़ती है।”

वृद्ध व्यक्ति को उसकी बात समझ नहीं आई।

लेकिन युवक ने भी अपनी बात को आगे नहीं बढ़ाया।

तभी नंदिनी और मीरा कॉलेज की ओर आती हुई दिखाई दीं।

“नंदिनी, तुम्हें नहीं लगता हमारा कॉलेज काफी अच्छा है?” मीरा ने पूछा।

“कॉलेज तो अच्छा है, बस यहाँ के लोग भी अच्छे निकलें।”

“तुम्हें हर व्यक्ति से इतनी अपेक्षाएँ क्यों रहती हैं?”

नंदिनी हँसने लगी।

“क्योंकि मैं आसानी से किसी से मित्रता नहीं करती।”

“अच्छा! तो मैं इतनी जल्दी तुम्हारी मित्र कैसे बन गई?”

“क्योंकि तुम मुझे बोलने का अवसर ही नहीं देती। इसलिए मेरे पास तुम्हें मना करने का समय नहीं था।”

दोनों हँसते हुए आगे बढ़ गईं।

दूर बैठा युवक नंदिनी को देखकर अचानक गंभीर हो गया।

उसकी आँखें नम होने लगीं।

वह कुछ क्षण के लिए उठा। उसके कदम नंदिनी की ओर बढ़ने लगे।

लेकिन अगले ही क्षण वह रुक गया।

उसने अपनी मुट्ठियाँ बंद कीं और स्वयं को नियंत्रित किया।

उसके होंठों पर कोई शब्द आया, परंतु वह उसे बोल नहीं पाया।

नंदिनी कॉलेज के अंदर चली गई।

वह युवक वहीं खड़ा रहा।

कभी-कभी जीवन में सबसे कठिन कार्य किसी अपने से मिलना नहीं, बल्कि सामने होते हुए भी उससे अनजान बने रहना होता है।

उस युवक के लिए शायद आज यही सबसे बड़ी परीक्षा थी।

एक और आगमन

तभी सड़क पर एक महँगी कार दिखाई दी।

कार कॉलेज के मुख्य द्वार के सामने आकर रुकी।

उसमें से एक युवक उतरा।

महँगे वस्त्र, आकर्षक व्यक्तित्व और चलने की शैली में अपने धन का गर्व।

उसका नाम विक्रम था।

विक्रम एक अत्यंत धनवान परिवार से संबंध रखता था। बचपन से ही उसकी अधिकांश इच्छाएँ उसके कहने मात्र से पूरी हो जाती थीं।

उसने कार चालक से कहा—

“शाम को समय पर आ जाना। मुझे प्रतीक्षा करना पसंद नहीं है।”

चालक ने सहमति में सिर हिलाया।

विक्रम ने अपना चश्मा ठीक किया और कॉलेज की ओर बढ़ गया।

आसपास खड़े कुछ विद्यार्थियों की दृष्टि उसकी कार पर थी, तो कुछ उसके व्यक्तित्व को देख रहे थे।

लेकिन उनसे अलग एक और व्यक्ति था, जो उसे बहुत ध्यान से देख रहा था।

वही रहस्यमयी युवक।

वह अपनी जगह से उठा। कुछ कदम आगे बढ़ा। लेकिन फिर स्वयं को रोक लिया।

उसने आँखें बंद करके अपने क्रोध पर नियंत्रण करने का प्रयास किया।

“नहीं... अभी नहीं।”

विक्रम बिना उसकी ओर देखे कॉलेज के अंदर चला गया।

रहस्यमयी युवक विक्रम को कॉलेज के अंदर जाते हुए देखता रहा।

उसकी मुस्कान गायब हो चुकी थी और आँखों में क्रोध दिखाई दे रहा था।

लेकिन क्यों?

अरे! यह धनवान युवक भी तो उसी मित्र समूह का हिस्सा बनने वाला था।

फिर इसे देखकर उस रहस्यमयी युवक के भीतर इतना क्रोध क्यों उत्पन्न हुआ?

बाकी सभी को देखकर उसके चेहरे पर मुस्कान थी, लेकिन इसे देखकर उसकी मुट्ठियाँ क्यों कस गईं?

आखिर ऐसा क्या जानता था वह युवक, जो अभी बाकी किसी को नहीं पता था?

कहीं यही तो नहीं था... जो आगे चलकर इन सभी के जीवन में...?

अध्याय 1 समाप्त।